# जरा सोचो

ब्रह्म प्रकाश गुप्ता

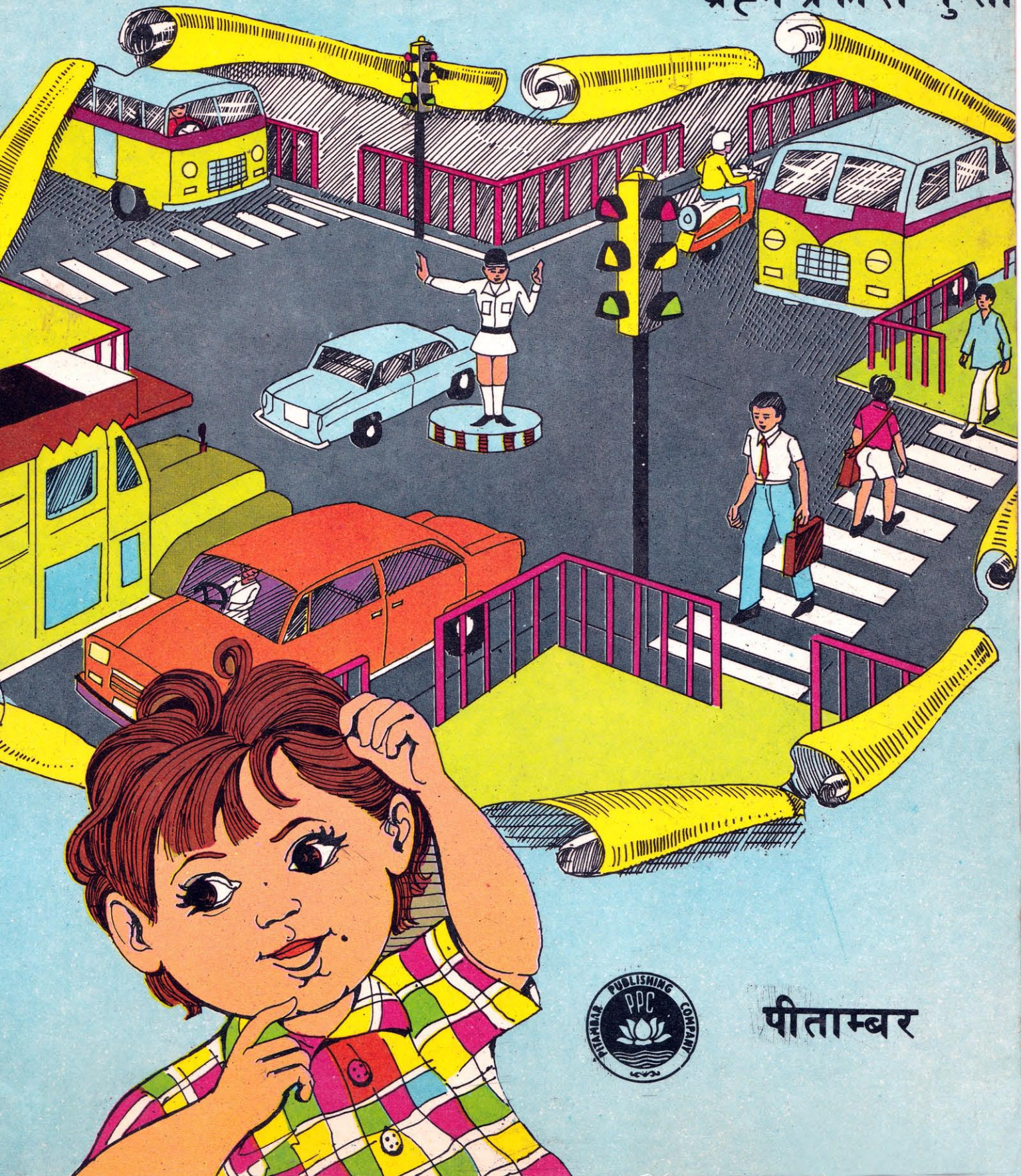



पीताम्बर

# जरा सोचो

पीताम्बर पब्लिशिंग कम्पनी प्रा० लि०
राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता प्रकाशक
888, ईस्ट पार्क रोड, करौल बाग,
नई दिल्ली-110005 (भारत)

# जरा सोचो

ब्रह्म प्रकाश गुप्त

पीताम्बर पब्लिशिंग कम्पनी प्रा० लि०

राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता प्रकाशक

888, ईस्ट पार्क रोड, करौल बाग,

नई दिल्ली-110005 (भारत)

# पीताम्बर व अम्बर की
# राष्ट्रीय और अन्तराष्ट्रीय पुरस्कारों से पुरस्कृत पुस्तकें

| क्र०सं० | पुस्तक | लेखक | पुरस्कार परिचय |
|---|---|---|---|
| 1. | गा गा गा-शिशु के गड़बड़ गीत | जयप्रकाश भारती | एन० सी० ई० आर० टी० द्वारा पुरस्कृत |
| 2. | हीरों का हार | जयप्रकाश भारती | हैंस ऐंडरसन् सम्मान प्राप्त प्रथम भारतीय पुस्तक |
| 3. | नीली रोशनी का महल | स्नेह अग्रवाल | हिन्दी अकादमी, दिल्ली से सम्मानित |
| 4. | चार चावल | ब्रह्मप्रकाश गुप्त | हिन्दी अकादमी, दिल्ली से सम्मानित |
| 5. | प्रेमचन्द : चित्रात्मक जीवनी | कमल किशोर गोयनका | हिन्दी अकादमी, दिल्ली से सम्मानित |
| 6. | भारत का स्वतंत्रता संग्राम | दुर्गा प्रसाद गुप्त | दिल्ली प्रशासन द्वारा पचास हज़ार रूपयों से पुरस्कृत |
| 7. | भारत का प्रथम अन्तरिक्ष यात्री | जयप्रकाश भारती | प्रथम विक्रम साराभाई पुरस्कार से पुरस्कृत |
| 8. | मधुर गीत भाग-1 | एस० पी० गोविल | सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार द्वारा राज पुरस्कार |
| 9. | नीली रेखा तक | भवानीप्रसाद मिश्र | हिन्दी अकादमी द्वारा सम्मानित |


प्रकाशक

पीताम्बर पब्लिशिंग कम्पनी प्रा० लि०
888, ईस्ट पार्क रोड, करौल बाग,
नई दिल्ली-110005 (भारत)
दूरभाष : कार्यालय : 770067, 776058, 526933
आवास : 5737437, 5715182, 5721321

संस्करण : प्रथम : 1991

मूल्य : 9/50 रुपये



कापीराईट : सर्वाधिकार सुरक्षित है।



कोड नं० : 22090

**फास्ट्रैक सिस्टमस**
783 ए, डी. बी. गुप्ता रोड, करौल बाग, नई दिल्ली-110 005.
दूरभाष : 519298, 518265

मुद्रक : पीयूष प्रिन्टर्स पब्लिशर्स प्रा० लि०
जी-12, उद्योग नगर, रोहतक रोड इण्डस्ट्रीयल एरिया,
नई दिल्ली-110041 **दूरभाष : 5472440**

# जरा सोचो

सड़क पर होने वाली दुर्घटनाएं बढ़ती जा रही हैं। समाचार-पत्रों में प्रतिदिन की खबरें छपती हैं। किसी टक्कर में कोई मर गया। किसी में कोई घायल हो गया। जिन टक्करों में मामूली चोट चपेट हुई हो उनका तो कोई हिसाब किताब ही नहीं है।

बात सोचने की है। घर से निकलते हैं। कहीं भी जाने के लिए—स्कूल, कॉलेज, दफ्तर, दुकान, या कहीं और। बाज़ार से कुछ लेने जाना है। किसी से मिलने जाना है। सड़क तो रास्ते में पार करनी ही पड़ेगी। और फिर यह चिन्ता भी रहेगी कि कहीं चोट चपेट न लगे। घर सही सलामत वापस भी पहुंच जाएं।

पैदल चलें, चाहे किसी सवारी पर—साइकिल, स्कूटर, कार, बस, या कैसे भी। हम इन चोट-चपेटों से बच भी सकते हैं। औरों को भी बचा सकते हैं। बात ज़रा सी समझने भर की है। कुछ समझने की, कुछ कोशिश करने की।

हम कर सकते हैं। लेकिन सब मिलकर। किसी अकेले के करने से कुछ नहीं होगा। इसलिए आओ, मिलकर सोचते हैं—

ब्रह्मप्रकाश गुप्त

ए-191 पंडारा रोड
नई दिल्ली-110003
विक्रमी संवत्सर 2048/शक संवत्सर 1913/22
मार्च 1991 ईस्वी

# अनुक्रमणिका

क्रम


1. ज़रा सोचो 1—15
2. सत्य और बुद्धि 16—26

# 1 जरा सोचो

सुधीर ऑफिस के लिए चला। ठीक से सड़क पार की। बस की लाइन में लग गया। बसें एक के बाद एक आ रही थीं। अपनी-अपनी बसों पर लोग बारी से चढ़ रहे थे। उसकी बस आई तो वह लाईन आगे बढ़ी। अचानक एक आदमी भागा हुआ आया और बीच में ही धक्का-मुक्की करके, यानि लाईन तोड़कर चढ़ने लगा। कुछ लोगों ने आपत्ति की, पर उसने सुनी अनसुनी कर दी। और लोग भी बस में चढ़ने की उतावली में थे, झगड़ा मोल लेने की फुरसत किसी को नहीं थी। जब लोग चढ़ गए, बस चल दी।

कंडक्टर ने टिकट देने शुरू किए। कुछ ने पैसे देकर टिकट लिए, कुछ ने अपने पास दिखा दिए। केवल वही व्यक्ति बचा। उसने न पास दिखाया, न पैसे ही निकाले टिकट के लिए। कंडक्टर ने उसे बस से नीचे जाने को कहा, तो वह बिगड़ पड़ा। "मैं नहीं उतरूँ तो तुम मेरा क्या कर लोगे" कंडक्टर शायद उससे और अपनी इन बातों से पूर्व-परिचित था, बोला—"तब तुम अच्छी तरह जानते हो कि क्या होगा।" लगा कि वह भी कंडक्टर को पहचान गया है। पैसे निकालने लगा। इतने में सुधीर बोल पड़ा "लाईन तोड़कर बस में भी चढ़ेंगे, और फिर बिना टिकट यात्रा भी करेंगे। बस न हुई, सरकार की ओर से तफरीह का सामान जुटा दिया गया है।"

जले पर नमक छिड़कने वाली बात हो गई। कंडक्टर पर तो पार बसाई नहीं, सुधीर पर बरस पड़ा—"यह कौन भौंका"।

सुधीर—"क्या सच बोलने को भौंकना कहते हैं।"

वह व्यक्ति—"सच या झूठ लगता है कि अपने परिवार में अवांछित नग हो जिससे सब पिंड छुड़ाना चाहते हैं।"

लोगों ने मुड़कर उसकी ओर देखा। एक ने तो गाली भी दे दी। वह और भड़कने ही वाला था कि कंडक्टर ने उसके कंधे झकझोर दिए—"देखो, मिस्टर,

मेरी बस में झगड़ा करोगे तो अच्छा नहीं होगा। चुपचाप पैसे निकालो, और आराम से यात्रा करो।"

वह व्यक्ति—नहीं तो क्या होगा।

कंडक्टर—"तुम अच्छी तरह जानते हो क्या होगा मैं कोई ऐसा वैसा दब्बू कंडक्टर नहीं हूँ।"

वह व्यक्ति—"लेकिन बीच में बोलने वाला यह छोकरा कौन होता है।"

कंडक्टर—"एक समझदार बालक और कौन, जो तुम्हें भी समझदारी का सबक सिखा रहा है। तुम्हें तो शर्म आनी चाहिए कि बजाए तुम्हारे सिखाने के यह तुम्हें सिखा रहा है। खैर तुम जल्दी से पैसे निकालो।"

वह व्यक्ति समझ रहा था कि पैसे दिए बिना छुटकारा नहीं। इसलिए कंडक्टर को पैसे तो दे दिए, लेकिन बोला—"तुम्हें दो शरीफ आदमियों के बीच में बोलने की आदत ही है क्या, तुम्हारे माता-पिता ने कुछ तमीज नहीं सिखाई क्या।"

सुधीर—"जरूर सिखाई है। और शायद आपसे ज्यादा ही।"

उस व्यक्ति के भड़क जाने के लिए काफी था। वह पहले ही चिढ़ा हुआ था, और चिढ़ गया। ऐसा लगा कि अभी उठकर सुधीर की खबर लेगा। सुधीर ने उसे देखा तो बोला—"अरे चचा, आप तो नाराज हो गए। मैं तो वैसे ही कह रहा था। हाँ, अब आप मुझे अच्छी तमीज सिखा दें ताकि भविष्य में उसी पर चल सकूँ।"

वह व्यक्ति—"तुम्हें तमीज सिखाने की जरूरत नहीं है। जरूरत है तुम्हारी अच्छी तरह पिटाई करने की, ताकि तुम्हारा दिमाग सही हो जाये।"

सुधीर—"चचा, अगर उससे काम ठीक बनता हो तो वही सही। लेकिन फिर तमीज की शिकायत आपको ही रहेगी।"

इतने में बस सुधीर के ऑफिस के पास पहुँच रही थी। अभी चौराहे पर रुकी थी, लाल बत्ती होने के कारण। इधर बत्ती पीली हुई उधर कोई उधेड़ आयु का व्यक्ति दौड़कर आया और पीछे से बस पर चढ़ने लगा। उधर से एक और आदमी दौड़ा हुआ आया, वह भी चढ़ने की कोशिश में था। बस हरकत में आ चुकी थी। दोनों व्यक्ति पहले चढ़ने की कोशिश में एक दूसरे के साथ उलझ गए। बत्ती हरी हो गई और बस चल दी। कुछ दूर तक दोनों व्यक्ति बस का हत्था पकड़े साथ-साथ भागते रहे, इस कोशिश में कि एकदम चढ़ जाएगें। अचानक अधेड़ व्यक्ति का हाथ छूट गया और वह मुँह के बल गिर कर घिसटता चला गया। अभी वह उठने की कोशिश में छटपटा

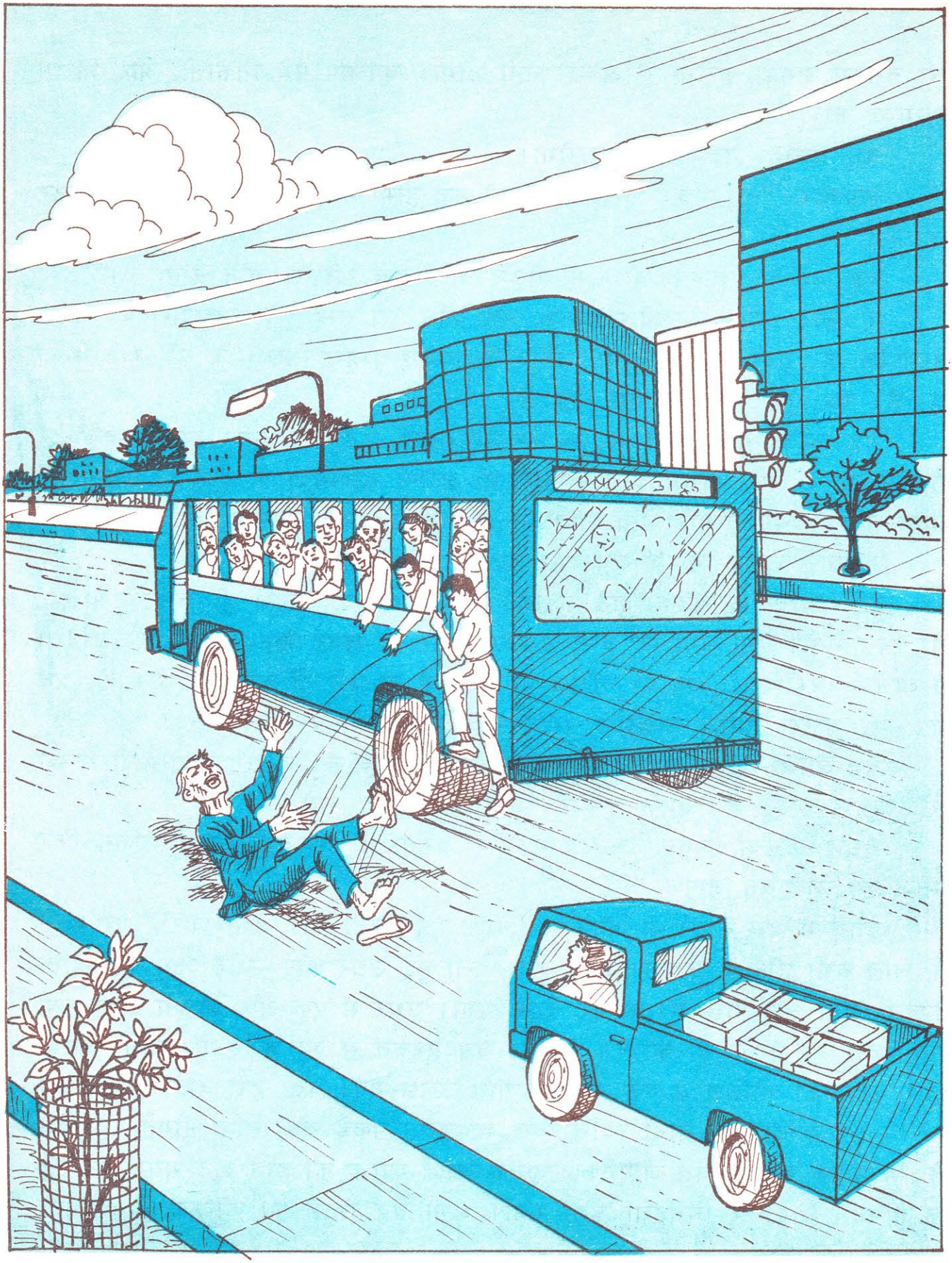

ही रहा था कि पीछे से आती एक टैम्पो का पहिया उसके सिर से टकरा गया। टैम्पो वाले ने रोकने की भरसक कोशिश की थी लेकिन यह सब आनन-फानन में ही हो गया। बस में सभी लोग दिल थाम कर यह दुखद दृश्य देख रहे थे। जब बस दूसरे पार पहुँची तो एक तहलका सा मचा हुआ था। एक ही शोर था कि बेचारा छटपटा कर मर गया। बस में बैठे सभी लोग अपनी-अपनी टिप्पणी कर रहे थे। कोई कह रहा था, ये टैम्पो वाले बहुत तेज चलाते हैं देखते नहीं। कोई कह रहा था, इस तरह लाल बत्ती पर चढ़ना उतरना काम खतरे का ही है। सुधीर को यह बात तर्क संगत लगी। उसने कहा— "देखा, चचा यह जल्दबाजी कितनी घातक हो सकती है।"

अभी वह कुछ बोलता कि बस स्टाप आ गया। सुधीर को यहीं उतरना था। उतरते-उतरते बोला—"अच्छा चचा, फिर मिलेंगे। आशा है, अगली बार आंटी ने पहले से ही आपका मूड खराब न कर दिया होगा।

सारी बस में ठहाका लगा। सब लोग खुश थे। केवल वह व्यक्ति शर्म से सिर छिपाने की कोशिश कर रहा था।

बस चल दी, अपने अगले पड़ाव की ओर।

सुधीर के मन में तरह-तरह के विचार उठ रहे थे। उस अधेड़ व्यक्ति के परिवार के दुख की कल्पना से ही वह दुखी था। दूसरी ओर उस व्यक्ति के पारिवारिक वातावरण की कल्पना कर रहा था। जिससे बस में उलझन हो गई थी। इसी मानसिक उद्वेग में ऑफिस पहुँचा। लेकिन वहां के वातावरण में मन बदल ही गया, और वह अपने काम में लग गया।

—•—•—•—•—

ऑफिस से आकर सुधीर ने माँ को सारी बात बताई। उस अधेड़ उम्र के व्यक्ति के इस प्रकार दुखद अंत से उसका हृदय इतना द्रवित हो गया कि कुछ देर तक वह मौन ही बैठी रही। यह सोच रही थी कि परिवार में कौन-कौन लोग होंगे। छोटे-छोटे बच्चे होंगे उनका क्या होगा, आदि आदि। ऐसी भी क्या जल्दी कि अपनी जान ही जोखिम में डाल दो। सुधीर को याद दिलाया—"इसलिए तो मैं तुम लोगों से भी कहती हूँ कि बस जब तक रूक न जाए अपने निश्चित स्टॉप पर, तब तक चढ़ना उतरना खतरनाक है। लेकिन तुम लोग सुनो तब न। अब अपनी आंखों से देख लिया इसका अंजाम।"

सुधीर—"मैं कभी तुम्हारी बात टालता हूँ माँ, हमेशा इस बात का पूरा ध्यान रखता हूँ"।

माँ—"और यह फिजूल में झगड़ा मोल लेने की तुम्हें क्या पड़ी थी।"

सुधीर—"किससे माँ"

माँ— अभी तुमने ही तो बताया किससे। वह कोई घर का आदमी थोड़े ही है कि तुम्हारी बातें बरदाश्त करेगा, तुम्हारे मिजाज से परिचित होगा।

सुधीर—पर माँ, मैंने तो कुछ झंझट मोल नहीं लिया। कोई आदमी अपने आप ही झंझट मोल लेना चाहे तो मैं क्या करूँ लगता है वह जरूर घर से लड़कर आया था।

माँ—"अच्छा लड़कर आया था या नहीं, तुम ठेकेदार हो किसी के घर के।"

सुधीर—"किसे फुरसत है ऐसे ठेके लेने की।"

माँ—"देखो जरा सी देर में बात बढ़ भी सकती है। बल्कि बढ़ ही गई थी। ऐसे झमेलों में पड़ो ही क्यों, कल को फिर कहीं तुम्हें पहचान कर झगड़ा करे, या और कुछ।"

सुधीर—"अरे नहीं माँ। तुम्हारा बेटा कोई ऐसा वैसा नहीं है।" (अपनी आस्तीन चढ़ाकर, डोले फुलाते हुए) क्या है किसी में दम कि मुझसे टकराए।

माँ—अच्छा, अच्छा, अपनी सीकिया पहलवानी को रहने दे। बात मान ले, वरना . . . . . .

सुधीर—"नहीं माँ, वरना नहीं, पिता जी से कहने की आवश्यकता नहीं। मैं तो तुम्हारा आज्ञाकारी बेटा हूँ न है न, माँ।"

माँ—"अब आया न रास्ते पर। अच्छा, ठीक है, चल अपना काम कर।"

तभी संतोष ने अपनी बात जोड़ने का मौका समझा। उसने भी एक ऐसी ही घटना की याद दिलाई।

—•—•—•—•—

उस दिन सन्तोष सबसे पहले कॉलेज से लौटा था। बहुत घबराया सा, कुछ परेशान सा लग रहा था। माँ ने पूछा, क्या बात है। बाला—"आज एक बड़ा भयंकर एक्सीडेंट देखा। सड़क पर खून ही खून पड़ा था। एक आदमी घटनास्थल पर ही फौरन मर गया। मेरे दिमाग में अभी तक दृश्य घूम रहा है। और कोई बात नहीं।"

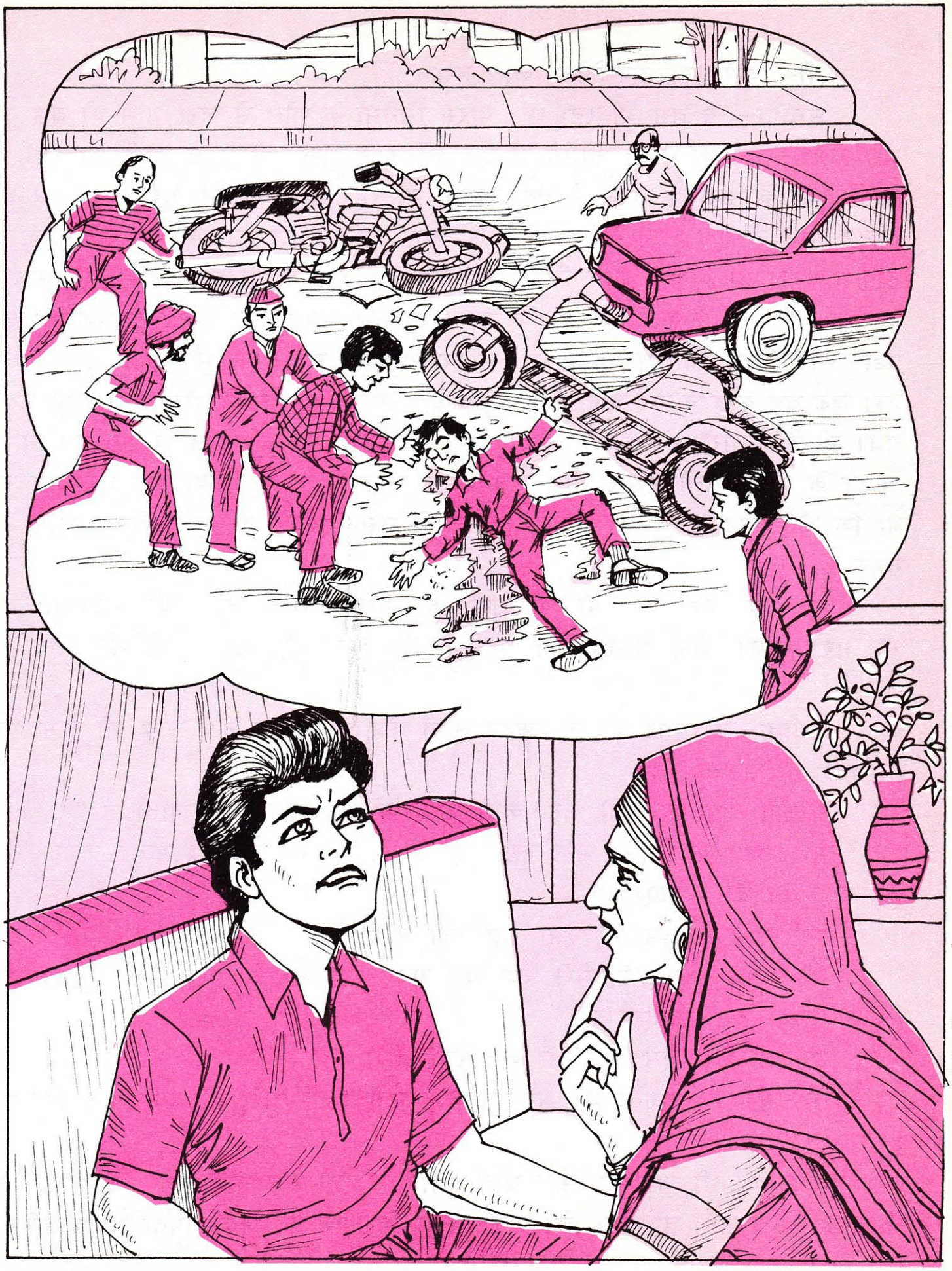

माँ—"कैसे हुआ एक्सीडेंट, कहाँ हुआ।"

सन्तोष—"मैं बस आ रहा था। पारस सिनेमा के गोल से जरा आगे ही बस आई थी। नेहरू प्लेस के पास। सामने से एक मोटर साइकिल तेजी से दौड़ी आ रही थी, मानों हवा के फर्राटे। उधर से एक स्कूटर आ रहा था। वह भी पूरी स्पीड पर था। स्कूटर वाले ने एक कार के ऊपर से ले जाने की कोशिश की। सामने की सड़क का ट्रैफिक पहले तो दिखाई नहीं दिया, क्यों कि वह कार के पीछे था। जैसे ही कार के दाई ओर से आगे निकल रहा था कि सामने से तेज आता हुआ मोटर साइकिल दिखाई पड़ा। लेकिन तब क्या हो सकता था। मोटर साइकिल सवार को भी स्कूटर तभी दिखाई पड़ा जब वह कुछ न कर सकता था। पूरी ब्रेकें लगाते-लगाते भी दोनों बुरी तरह टकरा गये। दोनों सावारों को काफी चोटें लगी हैं। उन्हें तो हस्पताल ले गए हैं। लेकिन स्कूटर के पीछे वाली सवारी ने तो वहीं दम तोड़ दिया सड़क पर खून ऐसे बह रहा था कि जैसे बाँध टूट गया हो। कहते-कहते उसके चेहरे पर परेशानी के भाव और गहरे हो गए।

माँ—"हे भगवान" माँ परिवारों की पीड़ा समझ रही थी। उसका दिल भी भर आया। बीच संगीता भी स्कूल से आ गई थी। उसने भी यह बात सुन ली थी।

संगीता—माँ, भाई भी तो स्कूटर बहुते तेज चलाता है न? उन्हें भी कभी ऐसा ही कुछ हो सकता है।

सन्तोष—"पागल कहीं की। कहीं भाई के लिए ऐसे कहा जाता है।"

माँ—"अब क्या करुँ, मेरी क्या वह सुनता है और वे कुछ कहते नहीं। ठीक है, जो होगा देखा जाएगा।"

संगीता—"मां तुम भी ऐसा कह रही हो।"

माँ—"अब क्या करुँ, मेरी क्या वह सुनता है और वे कुछ कहते नहीं। ठीक है, जो होगा देखा जाएगा।"

संगीता—"माँ तुम भी ऐसा कह रही हो।"

माँ—मुझे डर लगता है। अगर उन्होंने उसे रोका नहीं, तो क्या जाने कब क्या हो जाये।

शशि को भी जब यह सब बात पता चली तो वह तो घबरा गई। ऐसे, जैसे कि कुछ उसके साथ ही घटा हो। उसने कहा कि शाम को जरूर पिता जी से कहेगी।

भाई को धीरे चलाने के लिए कहना ही पड़ेगा। नहीं तो, पिता जी आज से उसका स्कूटर चलाना ही बन्द कर दें।

सुधीर बहुत खुश था। लेकिन यह कहानी सुनकर एकदम गम्भीर हो गया। उसका दिल तो वैसे ही कमजोर है। कुछ क्षणों को तो फिर वह शून्य में खो गया। परन्तु, फिर खुश भी हुआ कि चलो, आज भाई की खिंचाई तो होगी।

शाम को भाई (संजय) और पिता जी लगभग साथ ही साथ घर पहुँचे। छोटे सभी भाई बहनों ने कुटिल मुस्कान से उनकी ओर देखा। पिता जी ने भी देखा तो अर्थभरी दृष्टि से उनकी ओर देखने लगे। अधिक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। क्योंकि संगीता को कहाँ चैन पड़ता। उसने उतावली और तेजी से दिन का सब किस्सा बयान कर दिया। उसकी व्यग्रता से पूरी बात समझ पाना तो मुश्किल थी। परन्तु बात का सार स्पष्ट हो गया। पिता जी को मालूम था कि सभी बात को पूरी करने को उत्सुक हैं। उन्होंने कहा कि मुँह हाथ धोलूँ तब पूरी बात सुनूँगा।

पिता जी जैसे ही वापस कमरे में आए कि संगीता ने फिर बात छेड़ दी। उसने संजय से ही कहा—"भाई, आज से तुम्हारा स्कूटर चलाना बन्द।" कुछ संजीव ने कहा, कुछ सन्तोष ने कुछ शशि ने इस प्रकार पूरी बात सामने आ गई। माँ भी कमरे में आ गई थी।

माँ—"अब सब आपने सुन लिया है। मैं तो पहले से ही कहती हूँ। लेकिन मेरी सुनता कौन है।"

पिताजी—"अरे भागवान्, कौन नहीं सुनता तुम्हारी। जब मैं ही तुम्हारे इशारे पर नाचता हूँ तो और किसी की क्या मजाल कि तुम्हारी बात न माने।"

माँ—"तुम और तुम्हारी बातें। तभी तो बच्चे भी मज़ाक करते हैं।"

पिताजी—"इनकी यह मजाल, बोलो कौन करता है, अभी उसकी खबर ली जाएगी।"

माँ—"खबर लोगे, तुम, बच्चों को तुम्ही ने तो सिर पर चढ़ा रखा है।"

पिताजी—"अजी नहीं। ये तो क्या इनके फरिश्ते भी तुम्हारा कहना मानेंगे। (बच्चों से) चलो, सब माँ को अपनी आज्ञाकारिता का परिचय दो। (माँ से) मैं तो आपका सेवक हूँ ही।"

माँ—"बात को यूँ हंसी में न टालो। अगर संजय को तेज स्कूटर चलाने से नहीं रोका तो एक दिन पछताना पड़ेगा, कहे देती हूँ।"

पिताजी—लेकिन तुम्हारी क्यों नहीं सुनता यह।

माँ—इसी से पूछो, मुझसे क्या पूछते हो।

संजय—लेकिन माँ, अब कहाँ तेज चलाता हूँ। जबसे तुमने कहा है। फिर भी नाराज हो।

पिताजी—अच्छा ठीक है। आइन्दा संजय इस बात का ध्यान रखेगा। क्यों भई संजय ठीक है न।

संजय—जी पिताजी।

बच्चों ने माँ की विजय का करतल ध्वनि से स्वागत किया। इसमें भी एक भेद था। गहरा भेद। माँ भी समझती थी। वह रसोई में काम के बहाने खिसकने लगी। खाने को देर नहीं होनी चाहिए। शशि को भी हाथ बँटाने के लिए बुलाया। शशि जरा झिझकी तो डाँट पड़ी। सब लोग खाना खाने बैठे तो शशि ने सुबह वाली बात याद दिलाई जो अधूरी रह गई थी।

वह अधूरी बात थी सुधीर की पिकनिक की। वह कुछ मजेदार बात सुनाने वाला था। सबने कहा कि तो हो जाये शुरू। सुधीर ने फूल वालों की सैर से बात शुरू की। संजीव ने कहा कि सुबह यह बात तो नहीं हो रही थी। शशि ने कहा कि चलो यह भी सुनी जाय, लेकिन पहले सुबह वाली बात। सुधीर को ध्यान नहीं आ रहा था कि सुबह और क्या बात थी। शशि ने याद दिलाया ओ बुद्धू, वह बूढ़े बाबा वाली बात। हाँ, अब याद आया।

पिताजी—लेकिन भूमिका की जरूरत नहीं। मान लिया कि तुम जहाज महल पर पहुँचे। वहाँ एक बूढ़े बाबा से मिले। उन्होंनें अपनी परम्परा के गुण बताए, तुमने उन्हें रूढ़िवादी कहा। तब उन्होंने इन परम्पराओं के सम्बन्ध में कुछ वैज्ञानिक आधार बताए। अब शुरू करो।

सुधीर—धन्यवाद, पिताजी। बाबाजी का कहना था कि हमारे सभी रीतिरिवाज किसी न किसी वैज्ञानिक सिद्धान्त पर आधारित हैं। एक उदाहरण दिया, हलदात का।

पिताजी—सब जानते ही हो, यह हलदात क्या है। विवाह से पहले वर-वधू को एक प्रकार के विशेष मिश्रण से नहलाया जाता है। हल्दी, चूना, दही, चने का आटा, दूध आदि तेल में मिलाकर बारी-बारी से सब लोग वर-वधू के शरीर पर मलते हैं। भाभियाँ वगैरह इसमें कुछ गुदगुदाती भी हैं।

इस बीच संजीव भी आ चुका था। इन सब बातों को ध्यान से सुन रहा था। नहीं रहा गया तो बोल ही पड़ा। यह सब क्या फिजूल का तमाशा है।

संजय—करते सभी हैं, पर मजबूरी।

सुधीर—यही बात तो बाबाजी ने बताई। जब कोई पूछता है कि यह सब क्यों किया जाता है तो उत्तर मिलता है, यह अनिवार्य है, हमेशा होता है। बस और कुछ नहीं। नई पीढ़ी की खोज होनी स्वाभाविक है।पर जो बाबाजी ने कारण बताया, उससे तो बात साफ समझ में आ गई।

संजय—जरा हमारी भी आँखें खोल दो, महाराज।

सुधीर—मेरी बात नहीं है। जो बाबाजी ने कहा वही दुहरा रहा हूँ। लेकिन सुनते ही समझ में आ जाएगी।

संजीव—जैसे तुम्हारी तो समझ में आ ही गई है।

शशि—अब सुनने भी दोगे या बीच में ही उसे चिढ़ाते रहोगे।

सुधीर—"अच्छा, पिताजी, आप ही बताइए। बाबाजी का कहना है कि शरीर की जितनी सफाई इस मिश्रण से हो सकती है और किसी चीज से नहीं। साथ ही क्योंकि इसमें कार्बोलिक या अन्य कोई एसिड/सोडा नहीं है। इससे कोई चर्म विकार नहीं हो सकता। उल्टे, इससे शरीर पर एक ऐसी कान्ति और कोमलता आ जाती है कि पूछो मत। साथ ही, बदन भी हल्का रहता है। शरीर के प्राकृतिक तेल सुरक्षित रहते हैं और स्वस्थ भी। स्नायु भी स्वस्थ और पुष्ट होते हैं। हल्दी में एक विशेष गुण और भी है कि मन स्फूर्ति भी देती है।

पिताजी—हमारे बड़े मामा तो हफ्ते में एक बार इस मिश्रण का प्रयोग करते थे। बाकी दिन केवल शुद्ध जल का स्नान करते थे। तुमने देखा ही था कि उनका शरीर कैसा मोती सा चमकता था।

संजय—यह तो संयोग की बात भी हो सकती है।

सुधीर—कर के देख लो। काम आएगी। मैं तो साबुन, तेल, क्रीम, पाउडर सब छोड़कर यही शुरू करने वाला हूँ।

पिताजी—और इससे शरीर में एक विशेष सुगन्ध भी समा जाती है। जो मन-मोहक भी है और सौम्य-शान्त प्रकृतिदायक भी।

संजीव—हाँ, यह तो देखा है। दूल्हा, दलहिन पर चमक तो अलग ही होती है इस स्नान के बाद। यह बात दूसरी है कि इसमें कुछ योग उनकी मन की आन्तरिक प्रसन्नता का भी है।

संजय—पर, यह सब झमेला करे कौन।

सुधीर—यही तो बात है। सौन्दर्य को छोड़कर हम कृत्रिम सौन्दर्य की ओर आकृष्ट होते हैं। और वैज्ञानिक सिद्धान्त आधारित तथ्यों को तो ढकोसला कहकर टाल देते हैं। तथा नई परन्तु हानिकारक, चीजों को विज्ञान की देन समझकर अपनाते जाते हैं।

संजीव—अच्छा, लेकिन यह "हलदात" तो होती है केवल विवाह के अवसर पर। बाकी समय,

सुधीर—"विवाह के अवसर पर उस विशेष कान्ति और सौम्य की सर्वाधिक आवश्यकता होती है, इसलिए। वैसे, यह तो एक निमित है किसी रस्म को बनाने और चालू रखने का। मुख्य बात तो है वही वैज्ञानिक धरातल।

पिताजी—अच्छा और कौन सी मिसाल दी थी। बाबाजी ने।

सुधीर—पैरों में चांदी की पायजेब और चुटकी या बिछुआ पहनना। स्त्रियों द्वारा।

संजीव—इसमें भी कुछ वैज्ञानिक बात है, अरे यह तो औरतों के आभूषण हैं, उनके आकर्षण को बढ़ाने के लिए।

पिताजी—पहले सुनों, सुधीर बाबाजी से क्या सुनकर आया है। फिर अपनी राय देना।

सुधीर—पहली बात तो यह कि दक्षिण का आभूषण चाँदी है। सोना उसका विपरीत है। इसलिए नाभि के नीचे, याने शरीर के दक्षिण भाग में, चाँदी पहनना स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है। दूसरी बात है। पैरों के अंगूठे की पास वाली उंगली और एड़ी से ऊपर गड्ढे की पीछे की नलों का दिल और दिमाग से सीधा सम्बन्ध है। इन पर चाँदी का दबाव एक अवरोध का कार्य करता है। अर्थात्-चुटकी बिछुवा से वह नस कसी रहती है, और पायजेब से दूसरी नस बोझिल रहती है। दूसरा प्रभाव है स्त्री के दिल और दिमाग की उच्छृंखलता पर अंकुश रखना। बाबाजी का कहना था कि यह अंकुश वास्तव में संयम का बांध है जिससे उनका मन भी चलायमान न हो।

संजीव—मतलब कि पवित्रता बनी रहे, इधर-उधर न झाँके, न ही लिफ्ट दें।

सुधीर—ठीक समझे।

संजय—तब तो बाबा वाकई बड़े गुणी मालूम पड़ते हैं। और उन्होंने सुधीर को भी समझदार बना दिया। क्यों न हम भी कभी चलें उनके पास।

सुधीर—बाबाजी ने यह भी कहा था कि आरम्भ में हमारे ऋषि-मुनियों तथा गुणी-जनों ने अपनी साधना से इन तथ्यों का पता लगाया, प्रयोगों द्वारा उनकी पुष्टि की और फिर जन-जीवन में भर दिया। सब लोग यह बात समझते थे और इनका पालन

करते थे। कालान्तर में रीति-रिवाज आदि चलते रहे, लेकिन उनके वैज्ञानिक आधार को लोग भूलने लगे। कुछ विद्वान लोगों ने विचार किया कि ऐसे तो परम्परा ही क्षय न हो जाए। इसका उपाय निकाला गया इन बातों को धर्म-कर्म का आवरण देकर समय बीतता गया। लोगों को मूलभूत आधार बिल्कुल भूल गया याद रहा केवल धर्म। इसी से नई पीढ़ी ने इसको चुनौती देनी शुरू की। ह्रास का समय ऐसा ही होता है। नव युवक पूछते कि कोई काम क्यों किया जाता है। तो उत्तर मिलता है कि धर्म में ऐसी व्यवस्था है। अब यह तो कोई ठोस बात नहीं है। इसलिए उन्होंने उसे मानने या पालन करने से इन्कार कर दिया तो इसमें क्या बुराई थी। आधुनिक युग में तो विशेषतः ऐसे अन्ध विश्वास से काम चल ही नहीं सकता। स्वाभिक था कि ये रीति-रिवाज ढकोसला, रूढ़िवादिता, फूहड़पन, आदि नामों से विभूषित होने लगे। लेकिन अगर यह पता चले कि किसी रीति-रिवाज में कोई विशेष वैज्ञानिक आधार रहा है, तो भला कोई भी क्यों इसे अस्वीकार करेगा।

संजीव—इसका अर्थ हुआ कि हमें अपने पुराने ग्रन्थों में से ऐसे तथ्यों की खोज करनी चाहिए। और ऐसे जितने तथ्य मिलें, उन्हें प्रकाश में लाना चाहिए।

शशि—तब तो रामायण में भी बहुत गम्भीर तथ्य दिए गए हैं। और, माँ रोज इसे पढ़ती हैं। वह तो बहुत बड़ी वैज्ञानिक हुई। है न, पिताजी, लेकिन उन्हें क्या पता कि कितना विज्ञान इस प्रकार उन्होंने कितनी बार पढ़ लिया है। उनसे पूछना चाहिए। बुलाऊँ उन्हें।

संजय—इस संदर्भ में एक बात मुझे भी याद आ रही है।

सुधीर—"हाँ, क्यों नहीं, तुम भी बोलो।"

संजय—"ठीक जैसे पृथ्वी की भूमध्य-रेखा से पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण दिशाओं का बोध होता है, उसी प्रकार मनुष्य के शरीर में भी नाभि केन्द्र से चारों ओर चार दिशाएं हैं। नाभि से ऊपर उत्तर, नीचे दक्षिण, बाएं पूर्व और दाएं पश्चिम। जो समाचार छपा था, उसमें पृथ्वी और मनुष्य शरीर की इन दिशाओं की अनुकूल और प्रतिकूल चुम्बकीय शक्ति का वैज्ञानिक विश्लेषण था। विद्युत शक्ति के चुम्बकीय आकर्षण के सिद्धान्त पर आधारित इनका प्रभाव भी वैसा ही है। एक लम्बी खोज और अनुसंधान के बाद वैज्ञानिकों ने यह निष्कर्ष निकाला है कि दक्षिण दिशा की ओर पैर करके सोने से दक्षिण चुम्बकीय शक्तियों का टकराव होता है। इससे रस्साकशी जैसे खींचतानी होती है। परिणाम होता

है कि मनुष्य के शरीर का संतुलन बिगड़ जाता है। मानसिक तनाव और विकार उत्पन्न होते हैं। नींद ठीक नहीं आती।"

संजीव—"अच्छा जी, याने दक्षिणायन (दक्षिण की ओर) पैर करके न सोना भी वैज्ञानिक सिद्धान्त है, न कि धार्मिक आडम्बर जैसा हम अब तक समझते आए हैं।"

सुधीर—"जी, हाँ। यही मूल भाव तो था बाबाजी की [illegible] बात का।"

संजीव—"लेकिन यह वैज्ञानिक अन्वेषण किया किसने था?"

संजय—"कुछ विदेशी वैज्ञानिक ही थे, नाम याद नहीं आ रहा।"

संजीव—बात हमारी, खोजें बाहर वाले। यह तो बड़ी शर्म की बात है। हमारे अपने वैज्ञानिक और समाज-शास्त्री इस ओर ध्यान क्यों नहीं देते?"

संजय—"क्योंकि हम स्वतन्त्र जरूर हैं, परन्तु हमारी विचारधारा अभी तक परतंत्र है।हम पर विदेशी प्रभुत्व अभी भी गहरा है। बल्कि यों कहें कि बजाय घटने के यह बढ़ता ही जाता है, तो कुछ अतिशयोक्ति न होगी।"

शशि—"इससे अपने प्रति हीनता की भावना बढ़ती जाती है।"

पिताजी—"बिल्कुल। और जब तक हम इस हीनता की भावना से मुक्ति नहीं पा लेते, हमारा चिन्तन मनन सब उससे ग्रसित होने के कारण निरर्थक है। बल्कि खोखला भी है और हमें पीछे की ओर ले जाने वाला भी।"

सुधीर—"हमें जरूर यह अभियान चलाना चाहिए कि हम अपनी सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा करें और वैज्ञानिक धरातल को खोज निकालें और संसार को दिखा दें कि हमारा अतीत कितना सम्पन्न है और हम उसे अपनी विकास गति में किस प्रकार लगा रहे हैं। हमारे रीति रिवाज, त्यौहार,सामाजिक व्यवहार, मेले-नौटंकी सभी में ज्ञान का भंडार भरा पड़ा है। उसे ढूँढ निकालने और आधुनिक परिवेश में प्रस्तुत करने की जरूरत है।"

संजय - संजीव (एक साथ)—"जैसे उस नाटक में देखा था?"

सुधीर—शशि "हाँ, काफी कुछ वैसे ही। लेकिन पात्र भी आजकल की परिस्थिति में ढाल कर ज्यादा प्रभावी होगा।"

सबमें उस नाटक को याद करने की उत्सुकता स्वाभाविक थी।"

—•—•—•—•—

# 2

# सत्य और बुद्धि

## अंक 1 दृश्य 1

***स्थान : राजमहल ।***

*(राजा का दरबार लगा हुआ है । सिंहासन पर राजा विराजमान हैं। बाईं ओर एक ऊँचे आसन पर प्रधानमन्त्री बैठे हैं। दोनों ओर कई आसनों पर अन्य दरबारीगण तथा पदाधिकारी बैठे हैं।)*

**राजा :** स्वर्गीय प्रधानमन्त्री के दो जुड़वाँ पुत्र हैं। हमारे विचार से दोनों ही बुद्धिमान भी हैं। (स्वतः कुछ सोचकर) शायद उनकी आयु सोलह वर्ष के लगभग होगी ?

**एक दरबारी :** हाँ महाराज ! दोनों बालक चतुर और विद्वान हैं।

**राजा :** हमारे विचार से स्वर्गीय प्रधानमन्त्री के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी, उनके इन दोनों पुत्रों को इनकी बुद्धि और इनके पिता के पद के अनुरूप उच्च पदों पर नियुक्त करना।

(लगभग सभी दरबारी सहमति और प्रशंसा के भाव से राज़ा की ओर देखते हैं। परन्तु नया प्रधानमन्त्री दिवंगत प्रधानमन्त्री से जलता था और बहुत चालाक था।)

**प्रधानमन्त्री :** हाँ, महाराज ! ये दोनों तो मुझे अपने पुत्रों से भी ज्यादा प्यारे हैं। परन्तु यदि महाराज बुरा न मानें तो इन्हें उच्च पद देने से पहले, एक बात पर अवश्य विचार कर लें।

**राजा :** ऐसी क्या बात है ?

**प्रधानमन्त्री :** महाराज ! मृतक के लिए कुछ कहना शोभा नहीं देता। और फिर मेरी तो ऐसी आदत भी नहीं है। वैसे भी स्वर्गीय प्रधानमन्त्री तो मेरे अभिन्न मित्र थे।

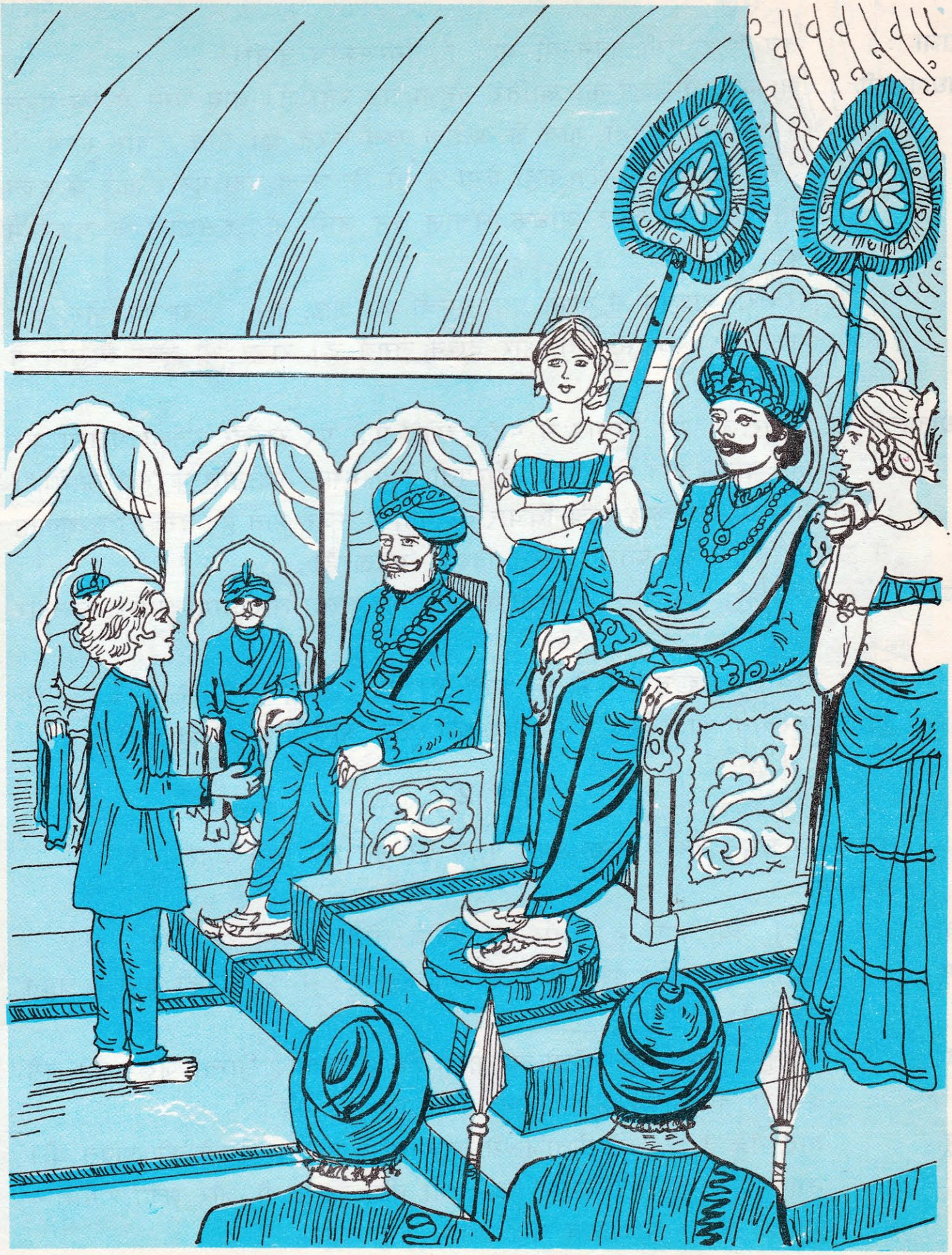

**राजा** : तब फिर ऐसी कौन-सी बात है, निस्संकोच कहो।

**प्रधानमन्त्री** : आपकी और देश की खातिर कहना पड़ रहा है। बात ऐसी है कि पहले प्रधानमन्त्री अपनी आय से अधिक खर्च करते थे। तीन हज़ार रुपये तो उन्हें मेरे ही देने थे। कहीं ऐसा न हो कि उच्च पदों पर रहकर ये बच्चे भी पिता की तरह अधिक खर्चालू बन जायें और घूसखोरी के चक्कर में पड़ जायें।

(सभी दरबारी आश्चर्य से कभी प्रधानमन्त्री की ओर, कभी राजा की ओर और कभी आपस में एक-दूसरे की ओर देखने लगते हैं। राजा भी कुछ विस्मय में पड़ जाते हैं।)

**प्रधानमन्त्री** : महाराज! मेरे विचार से पहले छोटे पदों पर रखकर इनकी परीक्षा कर ली जाये। बाद में, इनकी योग्यता के अनुसार पदोन्नति कर दी जायेगी।

(राजा थोड़ी देर तक कुछ सोच-विचार की मुद्रा में नज़र आते हैं। दरबारी उत्सुकता से उनके निर्णय की प्रतीक्षा करते दिखाई पड़ते हैं)

**राजा** : ठीक है। रामू महल के माली की सहायता करेगा और शामू हमारा टहलदार होगा।

(सभी दरबारी कुछ हत्प्रभ से रह जाते हैं। परन्तु प्रधानमन्त्री के चेहरे पर एक कुटिल मुस्कान आती है। तभी धीरे-धीरे फेड आउट हो जाता है।)

## दृश्य 2

*(राजा का शयन कक्ष। राजा अपने पलंग पर लेटे हैं। शामू टहलदारी में खड़ा है)*

**राजा** : शामू, क्या बात है? तुम कुछ खोये-खोये से लग रहे हो।

**शामू** : नहीं, महाराज ! ऐसी तो कोई बात नहीं है। मैं तो आपकी कृपा से बहुत सुखी हूँ।

**राजा** : परन्तु तुम्हारे चेहरे से तो लगता है कि तुम्हें कोई चिन्ता ज़रूर है। हमें बताओ तो शायद हम उसका समाधान कर सकें।

**शामू** : बात यह है कि हमें पिताजी से तरह-तरह के प्रश्न पूछने की आदत थी। उनके उत्तर सुनकर हमारी बुद्धि भी तीव्र होती थी और शंका-समाधान भी हो जाता था। अब वह संयोग नहीं रहा।

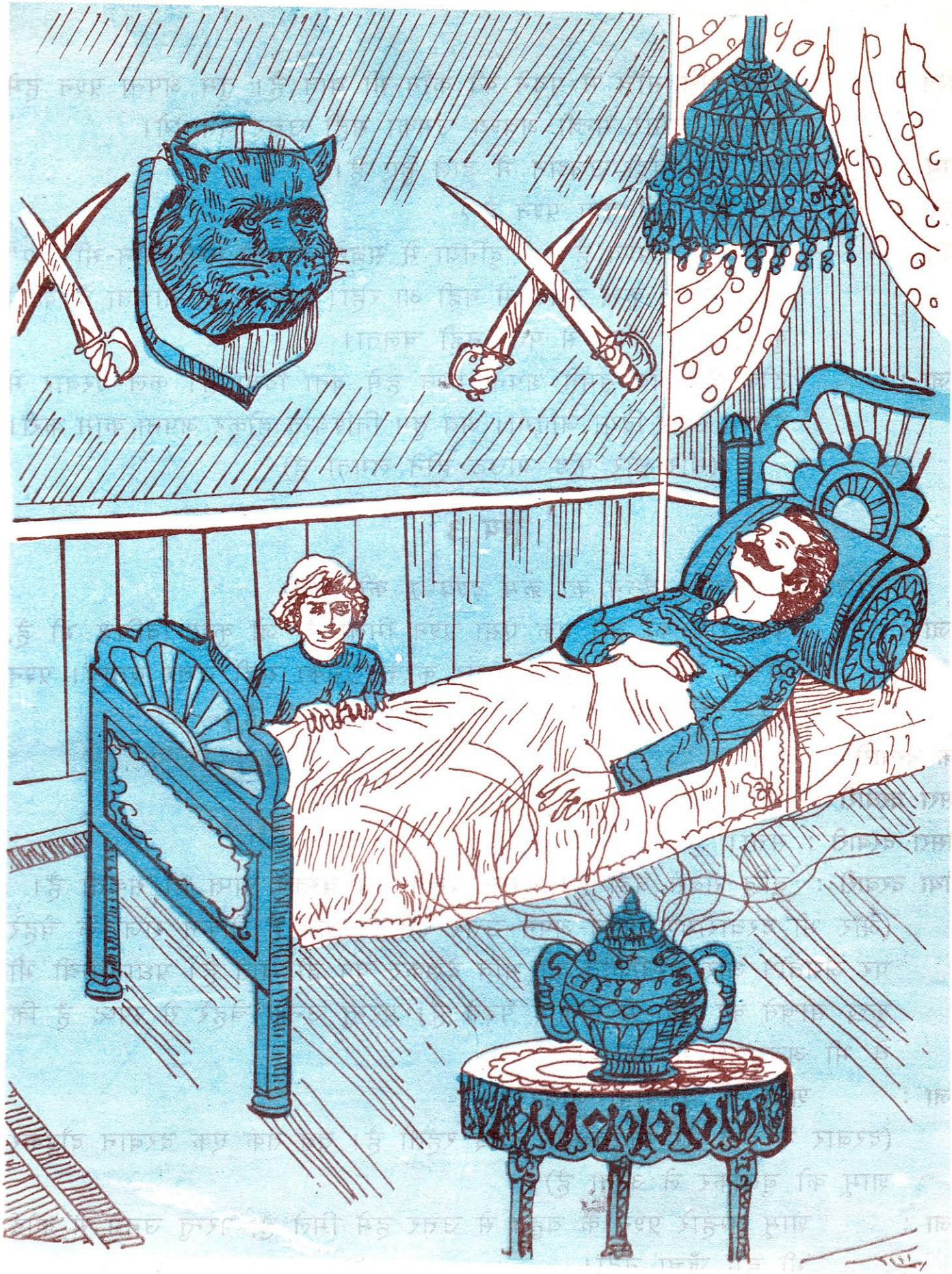

**राजा :** इसमें ऐसे सोच में पड़ने की कौन-सी बात है। तुम अपना प्रश्न हमें बताओ, हमारे मन्त्री अवश्य उसका सही उत्तर बतायेंगे।

**शामू :** एक प्रश्न बड़ी उलझन में डाले हुए है।

**राजा :** हाँ, हाँ, कहो क्या प्रश्न है?

**शामू :** महाराज ! प्रश्न है – "दुनिया में सबसे कीमती वस्तु कौन-सी है?" बहुत सोचा, कुछ समझ में नहीं आ रहा। कभी कुछ, सोचता हूँ, कभी कुछ, परन्तु ठीक से पता नहीं चलता।

**राजा :** ठीक है। अब तुमने अपना प्रश्न हमें बता दिया है। कल दरबार में इसका उत्तर दिया जाएगा। अब तुम निश्चिन्त होकर अपना काम करो।

(धीरे-धीरे फेड आउट होने लगता है)

## दृश्य 3

*(राजा का दरबार। बैठने का क्रम दृश्य 1 की तरह)*

**राजा :** कल रात को हमें एक ऐसा प्रश्न मिला है, जो कुछ विचित्र भी है, रोचक भी। आप लोग विचार करके उसका सही उत्तर बतायें। प्रश्न है– "दुनिया में सबसे कीमती वस्तु कौन-सी है?

**एक दरबारी :** धन

**दूसरा दरबारी :** भाग्य।

**तीसरा दरबारी :** सत्ता।

**चौथा दरबारी :** बुद्धि सबसे बड़ी है। उससे बाकी सब वस्तुयें प्राप्त हो सकती हैं।

(और भी दरबारीगण अपने-अपने उत्तर बताने लगते हैं लेकिन राजा के चेहरे पर असंतोष और अस्वीकृति का भाव देखकर चुप हो जाते हैं। प्रधानमन्त्री भी कुछ सोचने की मुद्रा में दिखाई पड़ते हैं। परन्तु उनके चेहरे से स्पष्ट है कि वे भी असमंजस में पड़े हैं)

**राजा :** शामू को बुलवाया जाये।

(दरबार में कुछ देर निःस्तब्धता छाई रहती है। तब तक एक दरबान दौड़कर शामू को बुलाकर ले आता है)

**राजा :** शामू तुम्हारे प्रश्न के बहुत से उत्तर हमें मिले हैं, परन्तु उनमें से कोई भी हमें जँचा नहीं।

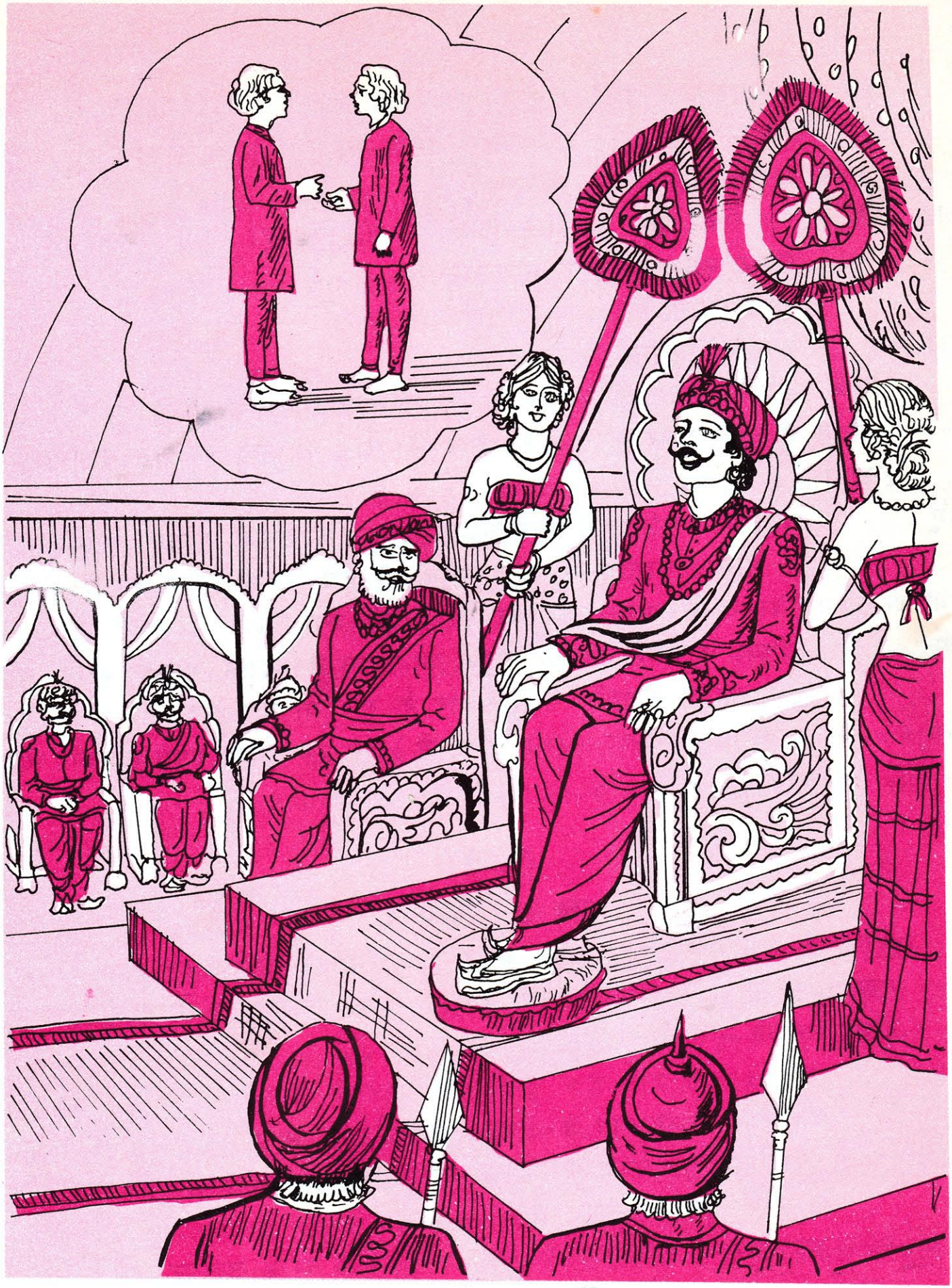

(वे सब उत्तर दरबान ने रास्ते में शामू को बता दिये थे)

मुझे विश्वास है कि इतने बुद्धिमान पिता के पुत्र होने के कारण तुम अवश्य कोई अच्चा सुझाव दोगे।

**शामू :** महाराज! मुझे अफसोस है कि मैं तो स्वयं ही इसमें उलझा हुआ हूँ। (फिर स्वतः ही कुछ सोचकर) शायद रामू कोई अच्छा सुझाव दे सके।

**राजा :** रामू को बुलाया जाये।

(जब तक रामू आता है, दरबार में पुनः निःस्तब्धता छा जाती है। कुछ दरबारी आपस में खुसर-पुसर करते नज़र आते हैं। रामू के आने पर उसे प्रश्न बताया जाता है।)

**रामू :** महाराज ! दुनिया में सबसे कीमती वस्तु न तो धन है, न सत्ता, न बुद्धिमानी, न भाग्य। वास्तव में कहीं गरीबों में हमें उसकी खोज करनी पड़ेगी।

**सभी दरबारी :** (विस्मय के साथ, एक स्वर में) : ऐसी क्या चीज़ हो सकती है?

**रामू :** दुनिया में सबसे कीमती मनुष्य का वचन है। इससे भलाई, बुराई, सुख, दुख, शांति, अशांति, सभी प्रकार के गुण या दोष पैदा हो सकते हैं।

**राजा :** सुन्दर, बहुत सुन्दर ! (कोषाध्यक्ष से ) इसे एक हज़ार रुपये पुरस्कार दिया जाये।

**(पटाक्षेप)**

## अंक 2 : दृश्य 1

*(राजा के बाग का दृश्य। राजा अपने दरबारियों के साथ टहल रहा है। रामू एक टहनी में लगे अंगूर तोड़ रहा है। रामू कुछ परेशान-सा नज़र आ रहा है। राजा उसकी ओर आता है।)*

**राजा :** रामू ! क्या बात है? तुम्हें कोई परेशानी है क्या?

**रामू :** महाराज, कैसी बात करते हैं। आपके रहते भला मुझे परेशानी कैसी?

**राजा :** परन्तु तुम कुछ सोच में पड़े लग रहे हो ! अवश्य कोई बात है। निस्संकोच होकर कहो, क्या बात है?

**रामू :** महाराज ! बात यह है कि उस दिन से शामू बराबर मुझे चिढ़ाता रहता है?

**राजा :** भला, वह क्यों?

**रामू :** वह कहता है कि उस दिन मेरे कहने पर यह तो सभी ने मान लिया कि मनुष्य का वचन दुनिया की सबसे कीमती वस्तु है। परन्तु वह पूछता है—"वह मिलता कहाँ है?'"

(राजा सोच में पड़ जाते हैं। राजा शामू को वहाँ बुलवाने की आज्ञा देते हैं। शामू आता है)

**राजा :** शामू ! तुम्हारा प्रश्न स्वाभाविक है, तर्क-संगत भी। परन्तु हमारे मन्त्रिगण और हम तुम्हीं से इसका उत्तर भी सुनना चाहते हैं।

**शामू :** महाराज ! सबसे कीमती वचन न तो कवियों के पास है, न पंडितों के। न वह विद्वानों के पास है, और न ही धनवानों के। और यदि महाराज क्षमा करें, तो वह आपके पास भी नहीं है।

**राजा :** तब वह कहाँ, और किसके पास है?

**शामू :** वह तो केवल सच्चे आदमी के पास मिलता है।

**राजा :** अति सुन्दर। हम तुम्हारे स्पष्ट उत्तर से प्रसन्न हैं, और तुम्हारी निर्भीकता से भी।

(राजा ने उसे भी एक हज़ार रुपया पुरस्कार देने का आदेश दिया। कोषाध्यक्ष शामू को पुरस्कार का रुपया देने लगता है। राजा आगे बढ़ जाता है। धीरे-धीरे फेड आउट होने लगता है।)

## दृश्य 2

*(राजा का बाग। बीच में बने कमलताल पर फोकस केन्द्रित। शामू ताल की सफाई कर रहा है। दूर से राजा अपने दरबारियों के साथ घूमता हुआ आता दिखाई पड़ता है। शीघ्र ही सब लोग ताल के किनारे पहुँच जाते हैं। राजा की दृष्टि शामू पर पड़ती है)*

**राजा :** क्यों, शामू ! प्रसन्न हो ?

**शामू :** महाराज की कृपा है।

**राजा :** अब तो तुम्हारे मन में कोई शंका नहीं रह गई?

**शामू :** महाराज की जय हो ! यह तो निश्चित हो गया कि सबसे कीमती वस्तु मनुष्य का वचन है। यह भी ठीक है कि वह सच्चे आदमी की ज़बान

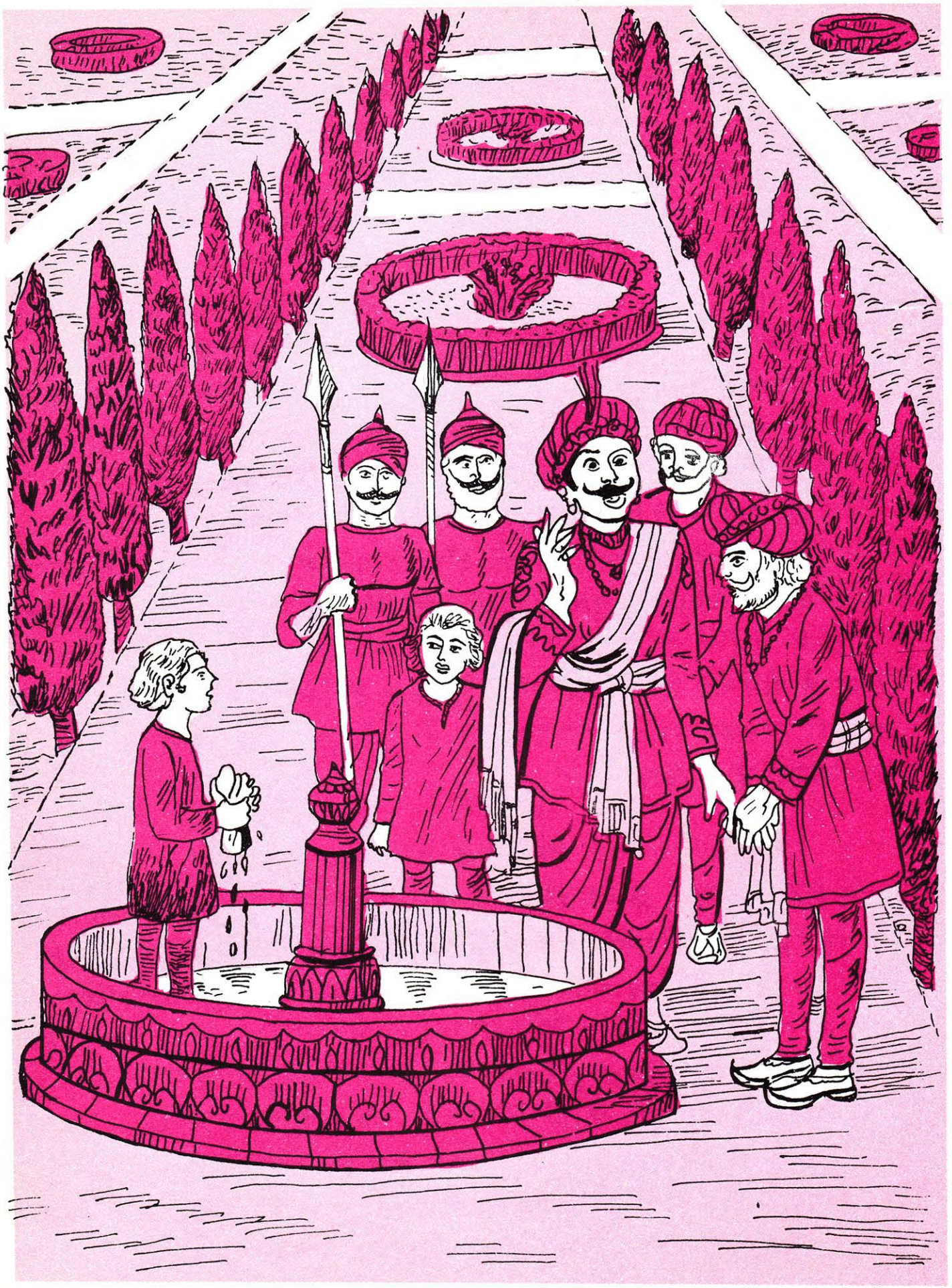

पर रहता है। परन्तु उस वचन का जीवन-तत्व क्या है? अर्थात् वह किसके सहारे टिका है?

(राजा अपने दरबारियों की ओर देखते हैं। परन्तु उनकी मुखमुद्रा से स्पष्ट है कि कोई इसका सही उत्तर नहीं सोच पा रहा है। इतने में रामू भी वहाँ पहुँच जाता है)

**रामू :** महाराज ! धृष्टता क्षमा करें। कुतूहल-वश इधर चला आया था। प्रश्न सुनकर रहा नहीं गया। आज्ञा हो तो अपनी तुच्छ बुद्धि में जो आता है, निवेदन करूँ?

**राजा :** आज्ञा है !

**रामू :** महाराज ! सच्चे मनुष्य के वचन का जीवन-तत्व है उसका स्वच्छ मन।

**राजा :** ज़रा विस्तार से कहो।

**रामू :** मनुष्य का वचन ही सबमें कीमती है। वह सच्चे आदमी की ज़बान पर रहता है। उसका स्वच्छ मन ही उसकी रक्षा करता है। और यह वचन वह कुछ प्राप्त कर सकता है जो न धन पा सके, न सत्ता, न साहस, और न कोई अन्य शक्ति।

(राजा उत्तर सुनकर बहुत प्रसन्न होते हैं। तुरन्त एक हज़ार रुपया पुरस्कार भी रामू को प्रदान किया जाता है। परन्तु साथ ही राजा कुछ सोच में पड़े नज़र आने लगते हैं)

**राजा :** (स्वतः) : अवश्य इसमें कोई रहस्य है। इन शब्दों में अवश्य हमारे महल में हो रहे किसी रहस्य की ओर संकेत है।

(प्रकट में) : रामू और शामू ! तुम्हारे शब्दों में अवश्य कुछ रहस्यमय आभास मिलता है । क्या स्पष्ट शब्दों में इसका निवारण करोगे?

**रामू और शामू (एक साथ) :** महाराज ! प्रधानमन्त्री जी ने कहा था कि हमारे पिताजी उनके तीन हज़ार रुपये के कर्ज़दार थे। पहले तो आपसे पुरस्कार में मिले ये तीन हज़ार रुपये प्रस्तुत हैं ताकि हमारे स्वर्गीय पिताजी की आत्मा इस ऋण से मुक्त हो जाये।

**राजा :** अपनी बात साफ-साफ कहो।

**रामू :** महाराज ! प्रधानमन्त्री जी के वे वचन सत्य वचन नहीं थे।

**राजा :** (प्रधानमन्त्री के मुख पर मलिन और पश्चाताप-मिश्रित भाव देखकर) :

प्रधानमन्त्री जी ! क्या ये बालक ठीक कह रहे हैं ?

**प्रधानमन्त्री :** (भयातुर शब्दों में) : महाराज ! अपराध क्षमा करें । वास्तव में ईर्ष्यावश मैं यह जघन्य पाप कर गया।

**राजा :** ओह इतना बड़ा धोखा ! इसका निर्णय हम इन बालकों पर ही छोड़ते हैं।

**रामू और शामू (एक साथ)** : महाराज की जय हो ! हमें प्रधानमन्त्री जी से कोई द्वेष नहीं है। बल्कि इनके कारण हमारी परीक्षा हो गई, यह तो हमारे लिये अच्छा हुआ। इन्हें और दण्ड न दें। इनका पश्चाताप ही इनका उचित दण्ड है।

**राजा :** विवेक इसे कहते हैं ! ठीक है, प्रधानमन्त्री को तुरन्त सेवा से निवृत्त किया जाता है। वह अपने पाप का प्रायश्चित करें। तुम दोनों को हम अपना प्रमुख सलाहकार नियुक्त करते हैं।

**(पटाक्षेप)**

□□

# जरा सोचो

ब्रह्म प्रकाश गुप्ता

कोड नं० 22090 मूल्य 9/50